सूफ़ी काव्य की प्रवृत्तियाँ

पी.एम.आर. जयन्ती
प्राध्यापक, हिंदी विभाग
एस.के.आर. एवं एस.के.आर. राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय (स्वायत्त)
कडप्पा (आंध्र प्रदेश)

सारांश-सूफ़ी काव्य मध्यकालीन हिंदी साहित्य की सबसे महत्वपूर्ण काव्य परंपरा है। इसमें लौकिक प्रेम के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम की व्यंजना की गई है। सूफ़ी कवियों ने प्रबंध शैली में दीर्घ काव्य रचे, जिनमें भारतीय और ईरानी परंपराओं का सुंदर मिश्रण दिखाई देता है। जायसी, मंझन, कुतुबन आदि सूफ़ी कवियों ने अपनी कृतियों में प्रेम को सार्वभौम मानवीय अनुभूति के रूप में प्रस्तुत किया है। नारी पात्रों का चित्रण प्रतीकात्मक है और ये ईश्वर के प्रेम का प्रतीक हैं। सूफ़ी काव्य में दर्शन, भक्ति, नीति, इतिहास और संस्कृति का समन्वय मिलता है। लोकप्रचलित मुहावरों और अलंकारों का सुंदर प्रयोग इन काव्यों को साहित्यिक महत्व प्रदान करता है। संक्षेप में, प्रेम ही सूफ़ी काव्य का मूल विषय है और लोकमंगल ही इसका अंतिम लक्ष्य है।

बीज शब्द: सूफ़ी प्रेमाख्यान, सूफ़ीमत, आध्यात्मिक विकास, परमात्मा की प्राप्ति

प्रस्तावना-सूफ़ी प्रेमाख्यान काव्य परंपरा मध्यकालीन हिंदी साहित्य की एक महत्वपूर्ण काव्यधारा मानी जाती है। सूफ़ी शब्द की व्युत्पत्ति पर विभिन्न विद्वानों के अलग-अलग मत हैं। कुछ विद्वान सूफ़ी शब्द को 'सोफिया' का रूपांतरण मानते हैं, जो ज्ञानप्राप्त व्यक्ति को सूचित करता है। अन्य विद्वान इसे 'सफा' शब्द से जोड़ते हैं, जिसका अर्थ है शुद्धता और पवित्रता। एक विचारधारा यह भी है कि सूफ़ी शब्द 'सूफ़' (ऊन) से उत्पन्न हुआ है, क्योंकि सूफ़ी लोग मोटी ऊनी चादर पहनते थे।

सूफ़ी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

१. प्रबंध कल्पना-सूफ़ी कवियों के ग्रंथ अधिकतर प्रबंध शैली में लिखे गए थे। इनके कथानक में रमणीयता के साथ संबंध विवाह भी सुव्यवस्थित रूप में दिया गया है। इन्होंने नायिकाओं को अपनी रचनाओं का विषय बनाया। इनके वस्तु वर्णन में नदियाँ, वन, समुद्र और पर्वत होने के कारण ये आर्थिक दृष्टि से लोकप्रिय नहीं बने। इनकी रचनाओं में लौकिक प्रेम से अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना की गई है। इनके कथानक में मुख्य पात्रों के साथ-साथ अन्य देव और अप्सरा संबंधी कहानियाँ भी मिलती हैं। प्रबंध कल्पना इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है, जिसमें सुखांत और दुखांत दोनों प्रकार की कथाएँ मिलती हैं।

२. मसनवी परंपरा-मसनवी परंपरा का प्रभाव सूफ़ी कवियों की प्रेमगाथाओं में स्पष्ट दिखाई देता है। फारसी की मसनवी पद्धति के अनुसार कथानक के आरंभ से पूर्व ईश्वर वंदना, मुहम्मद साहब की स्तुति, तत्कालीन बादशाह की प्रशंसा तथा आत्म परिचय दिया जाता है। सूफ़ी काव्य के प्रमुख कवि जायसी ने अपनी रचना 'पद्मावत' में सर्वप्रथम ईश्वर वंदना, मुहम्मद साहब की स्तुति, गुरु वंदना, तत्कालीन शेरशाह की प्रशंसा और आत्म परिचय प्रदान किया है। सूफ़ी साहित्य में भारतीय और ईरानी पद्धतियों का सुंदर मिश्रण है। लौकिक प्रेम के माध्यम से आध्यात्मिक प्रेम की व्यंजना सूफ़ी कवियों ने धार्मिक उद्देश्यों के कारण ही की है।

३. पात्र चित्रण-पात्रों का चरित्र एक विशेष ढाँचे में ढला हुआ परंपरागत है। पात्रों के चरित्र चित्रण में विविधता न होकर बंग-परंपरा का ही पालन हुआ है। सूफ़ी काव्य में मुख्यतः प्रेम संबंधी प्रसंगों का ही चित्रण किया गया है। नायक और नायिका के विविध प्रसंगों और व्यापारों को उनके माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है।

४. प्रेम की अभिव्यंजना-मानव जीवन में प्रेम एक विशेष भाव है। मानव मन की कोमल-कांत अनुभूति को ही प्रेम कहा जाता है। सूफ़ी साहित्य की रचनाओं में प्रेम को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया है। सूफ़ी कवियों ने प्रेम और सौंदर्य को जीवन का चरम लक्ष्य माना है। इनके अनुसार राजा रत्नसेन जैसे प्रेमी को उनकी राह से विचलित करता है, तो अलाउद्दीन जैसे विरोधी का भी चित्रण किया गया है। शैतान से बचने के लिए गुरु की आवश्यकता होती है। 'पद्मावत' में हीरामन को गुरु के रूप में चित्रित किया गया है।

५. नारी चित्रण और प्रतीकात्मकता-सूफ़ी कवियों ने नारी को ईश्वर का प्रतीक माना है। नारी को स्वकीया और परकीया दोनों रूपों में चित्रित किया गया है। भावात्मक रहस्यवाद की विशेषता जो सूफ़ा काव्य में दर्शनीय है, वह अन्यत्र नहीं मिलती। इनके सभी पात्र प्रतीकात्मक हैं। रहस्यवाद की अभिव्यंजना के लिए नारी पात्र का महत्वपूर्ण स्थान है।

६. भारतीय धर्म और दर्शन का प्रभाव-सूफ़ी मत इस्लाम और अन्य धर्मों से प्रभावित है। सूफ़ी मत का उद्भव इस्लाम से हुआ है, किंतु वैष्णव धर्म से प्रेरित होकर सूफ़ी विद्वान अहिंसावादी बन गए। सृष्टि चार तलों के योग से रचित है, ऐसा निश्चित कवि मानते हैं। भारतीय और ईरानी विचारधाराओं का सुंदर मिश्रण सूफ़ी काव्य में दिखाई देता है।

७. आध्यात्मिक प्रेम-सूफ़ी कवियों में जायसी का स्थान विशेष है। जायसी की 'पद्मावत' में साहित्य, दर्शन, भक्ति, नीति, इतिहास, कल्पना, संस्कृति, आचार, प्रेम और गृहस्थ जीवन का सुंदर चित्रण हुआ है। यह ग्रंथ आध्यात्मिक प्रेम का भी प्रतीक है।

८. रस वर्णन-भारतीय साहित्य में भरतमुनि से आचार्य रामचंद्र शुक्ल तक सभी ने रस को सर्वोच्च स्थान दिया है। रस संपूर्ण जीवन में व्याप्त रहता है। शृंगार और करुण रस को सूफ़ी कवि अधिक महत्व देते हैं। इन्हीं रसों के माध्यम से प्रेम की गहनता को प्रस्तुत किया गया है।

९. काल पक्ष-सूफ़ी प्रेमाख्यानों की भाषा प्रायः अवधी है। लोक प्रचलित मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग भाव अभिव्यक्ति में सक्षम है। उस्मान और नसीरी पर भोजपुरी का प्रभाव दिखाई देता है। उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, श्लेष आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग मिलता है। यह निश्चित है कि सूफ़ी काव्य में प्रेम तत्व ही सर्वप्रमुख है।

सभी प्रेम कहानियों में भारतीय वातावरण बना रहा है। ऐतिहासिक और काल्पनिक प्रेमगाथाओं की अपेक्षा लोकप्रचलित लोकगाथाओं पर आधारित प्रेमकाव्यों में प्रेम का लोकस्तर अधिक है। इनके काव्यों में जाति, वर्ण, वर्ग, धर्म, संप्रदाय आदि से परे लोकमंगल की उपासना की गई है। प्रेम को सार्वभौम स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए सूफ़ी कवियों ने प्रेम को ही काव्य का संदेश और सार बनाया है।

संदर्भ सूची-

1. जायसी, मुल्ला दाऊद। पद्मावत। संपादक - आचार्य रामचंद्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
2. शुक्ल, रामचंद्र। हिंदी साहित्य का इतिहास। नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी।
3. मिश्र, विजयपाल सिंह। हिंदी साहित्य: संस्कृति और परंपरा। राजकमल प्रकाशन, दिल्ली।
4. शर्मा, देवेंद्र। मध्यकालीन हिंदी काव्य। हिंदी बुक सेंटर, दिल्ली।
5. पाण्डेय, उदय नारायण। सूफ़ी काव्य और भारतीय परंपरा। साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
6. वर्मा, धीरेंद्र। दक्षिण भारत की हिंदी परंपरा। राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादेमी, जयपुर।